

क. परमेश्वर की विश्वासयोग्यता (यहोशू 21:43-45)

- ❖ यहोवा ने इस्राएलियों को वह “सब देश” दिया। (यहोशू 21:43) और यहोवा ने उन “सब शत्रुओं” को उनके वश में कर दिया। (यहोशू 21:44), अतः “सब की सब पूरी हुई” (यहोशू 21:45)।
- ❖ शब्द “सब” का बार-बार उपयोग इस बात पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में विश्वासयोग्य है। उनके शत्रु परमेश्वर द्वारा पराजित किये गये थे। वे उस देश में निवास कर सके क्योंकि उस पर परमेश्वर का अधिकार था। वे इस बात के प्रति निश्चित हो सकते थे कि वे उस देश में अब भी रह रहे कनानियों को खदेड़कर बाहर निकाल देंगे, क्योंकि परमेश्वर ने अब तक अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी की थीं और भविष्य में भी करता रहेगा।
- ❖ यह सब हमारे भले के लिए होता है। परमेश्वर विश्वासयोग्य बना रहता है (व्यवस्थाविवरण 7:9; भजन संहिता 117:2; विलाप 3:22-23)। उसने हमें बचाने और पृथ्वी को विरासत के रूप में देने की प्रतिज्ञा की है, और वह इस प्रतिज्ञा को पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6; 1 पतरस 1:5; भजन संहिता 37:29)।

ख. परमेश्वर ने क्या किया है और वह क्या करेगा (यहोशू 23:1-5)

- ❖ पुरनियों को दिए गए अपने भाषण में, यहोशू ने उन्हें यह बताना शुरू किया कि परमेश्वर ने पहले ही क्या किया था और वह अब भी क्या करने जा रहा है:
 - उसने राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध किया (यहोशू 23:3)
 - उसने देश को गोत्रों में बाँट दिया (यहोशू 23:4)
 - वह बचे हुए राष्ट्रों को निकाल देगा (यहोशू 23:5)
- ❖ यह सब (जो पहले किया जा चुका था और जो अभी किया जाना था) इस्राएल की ओर से एक ही शर्त के अधीन था: आज्ञाकारिता (यहोशू 23:6)।
- ❖ इस्राएल का इतिहास आज हमारे लिए एक पाठ है। परमेश्वर ने पाप पर विजय प्राप्त कर ली है और यीशु के बलिदान के द्वारा हमें उद्धार का आश्वासन दिया है (कुलुस्सियों 2:15)।
- ❖ यह हम पर निर्भर है कि हम लड़ाई जारी रखें, और विजयी जीवन जीने के लिए पवित्र आत्मा पर भरोसा रखें (2 कुरिंथियों 10:3-5; इफिसियों 6:11-18)।

ग. विश्वासयोग्यता का प्रतिफल (यहोशू 23:6-10)

- ❖ इस्राएल की विश्वासयोग्यता का प्रतिफल उसके सभी शत्रुओं पर पूर्ण और सम्पूर्ण विजय होगी (यहोशू 23:6, 10)।
- ❖ कनान की विजय के संदर्भ में, परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता तीन विशिष्ट तरीकों से प्रकट होनी थी:
 - उस देश के निवासियों से विवाह न करना (यहोशू 23:7ए)
 - उनके देवताओं का नाम न लेना (यहोशू 23:7बी)
 - उनके देवताओं की पूजा न करना (यहोशू 23:7सी)
- ❖ उन्हें आध्यात्मिक शुद्धता बनाए रखनी थी। अगर वे वहाँ के निवासियों से शादी कर लेते, तो वे उनके देवताओं की बात करने लगते और अंततः उनकी पूजा करने लगते। इसी प्रकार सुलैमान का धर्मत्याग शुरू हुआ था (1 राजा 11:4)।
- ❖ इसलिए, हम मसीहियों को भी यही सलाह दी जाती है कि हम भी इन्हीं सुझावों का पालन करें और अविश्वासियों से विवाह न करें (2 कुरिंथियों 6:14-16)।

घ. हमें क्या करना चाहिए (यहोशू 23:11-14)

- ❖ हम बिना किसी संदेह के कह सकते हैं कि यहोशू के भाषण का मुख्य बिंदु पद्य 11 में पाया जाता है: परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना।
- ❖ इस्राएल को अन्य देवताओं से प्रेम न करके अपना प्रेम प्रदर्शित करना था, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें गंभीर हानि होती (यहोशू 23:12-13)। इसके अतिरिक्त, यहोशू उस प्रेम को पोषित करने के लिए एक प्रोत्साहन का प्रस्ताव देता है: परमेश्वर की विश्वासयोग्यता (यहोशू 23:14)।
- ❖ आज हमारे पास इससे भी बड़ी प्रेरणा है: यीशु का उदाहरण (यूहन्ना 13:34)। परमेश्वर हर उस व्यक्ति के साथ घनिष्ठ और व्यक्तिगत संबंध बनाना चाहता है जो उसके प्रेम के प्रति प्रत्युत्तर देता है।
- ❖ परिणामस्वरूप, सभी के प्रति उसका प्रेम हमारे स्वैच्छिक और पारस्परिक प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए रूपरेखा का निर्माण करता है।

ङ. विश्वासघात की सज़ा (यहोशू 23:15-16)

- ❖ यहोशू ने अपने भाषण का अंत अवज्ञा के परिणामों के बारे में चेतावनी के कठोर शब्दों के साथ किया: परमेश्वर के क्रोध को सहना (यहोशू 23:15-16)।
- ❖ साथ ही वह प्रतिज्ञा किए गए देश में भी था और वाचा को तोड़कर यहोवा के क्रोध को भड़काने के परिणामों से पूरी तरह अवगत था।
- ❖ वही प्रेम जिसके कारण परमेश्वर ने हमारे लिए अपने पुत्र को दे दिया, वही प्रेम उन लोगों के प्रति क्रोध में प्रकट होता है जो पाप से हठपूर्वक चिपके रहते हैं (यूहन्ना 3:16; रोमियों 2:5)।
- ❖ इस्राएल असफल रहा और उसे इसकी सज़ा भुगतनी पड़ी। आज हमारे पास एक अलग कहानी लिखने का मौका है: विश्वासयोग्य बने रहना और उसके प्रेम में बने रहना (यूहन्ना 15:9)।